कहानियों के अण्डे

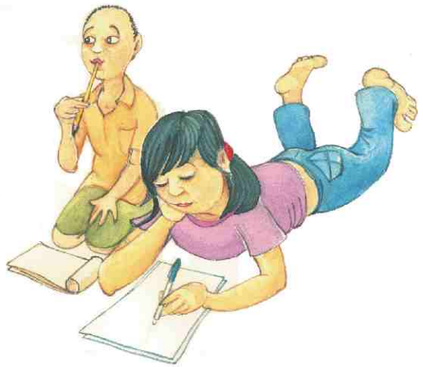

"कहानियों के अण्डों" से तुम सबने बहुत ही खूबसूरत कहानियाँ निकालीं। इनमें से कुछ इस बार पढ़ो। शेष अगली बार।

एक दिन घर में कुछ मेहमान आ गए

एक दिन घर में कुछ मेहमान आ गए। मेहमान बहुत सारे थे। उन मेहमानों के धोती-कुरता बहुत गन्दे थे। पूछा उनसे कि मेहमान सोते उठकर आए हो क्या? और फिर कहा कि रोटी पानी खा लो। तब उन्होंने कहा कि रोटी पानी तो नहीं खाएँगे। ऐसे ही ऐसे रात हो गई। तब उनसे कहा कि अब तो रोटी-सब्ज़ी बन गई है, रोटी खा लो। मेहमान कहने लगे, "हम तो अब सिरपुरा में ही जाकर रोटी खाएँगे।" उनसे रोटी खाने की जोरी की पर उन्होंने रोटी नहीं खाई। फिर वे चले गए। बस स्टैण्ड पर गए तो पता चला कि गुर्जर आरक्षण आन्दोलन के कारण बस नहीं चल रही थी। तब वे लौटकर फिर घर आए। बोले, "रोटी ले जाओ।" उनके लिए थालियाँ लगाई गईं। अब उन्होंने आराम से खाना खाया और चैन से सो गए।

इस बार एक बार भी नहीं कहा कि सिरपुरा में जाकर खा लेंगे।

नरेश गुर्जर, नौ साल, सवाई माधोपुर, राजस्थान

वह सुबह काफी भयानक थी

वह सुबह काफी भयानक थी। दिन में ही अँधेरा छा गया था। चारों तरफ बारिश हो रही थी। एक बच्चा सड़क पर दौड़ रहा था। बारिश में भीग रहा था। घरों में चारों तरफ सन्नाटा छाया हुआ था। शोर था केवल बारिश की आँधी का। जंगली जानवरों की आवाज़ें आ रही थीं। वह आदमी डरता-डरता भाग रहा था। उसे अचानक घोड़े की आवाज़ आई। उसने देखा कि घोड़े चारों तरफ आ गए हैं। वह रुक गया और पेड़ के ऊपर चढ़ गया। वह इतना ऊपर चढ़ गया कि नीचे देखकर ज़ोर से चिल्लाया, "अरे, मुझे बचाओ।" मैं गिरने वाला हूँ। इतने में ही वहाँ चोर आ गए। बोले, "अरे नीचे उतर नहीं तो तू मर जाएगा।" उस आदमी ने कहा, "तुम यहाँ से चले जाओगे तो मैं नीचे उतर जाऊँगा।" चोर चिल्लाए, "अरे, हम तो तेरे ही भाई हैं, हम तुझे लेने आए है।" फिर वह नीचे आ गया और बोला, "अरे, मैं तो बिलकुल डर गया था। डर के मारे गलत समझ बैठा।" फिर बोला कि ओह! कितनी भयानक सुबह थी यह।

रामराज नायक, चौदह साल, सवाई माधोपुर, राजस्थान

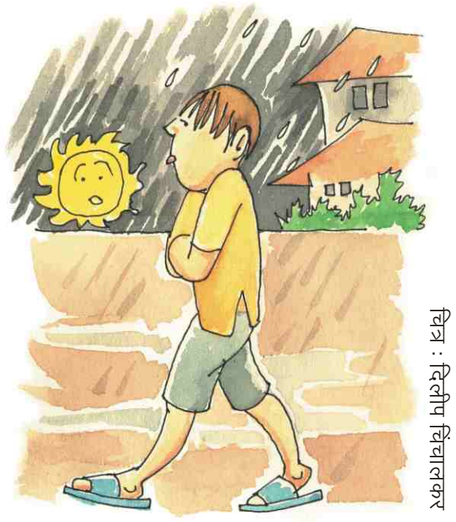

चित्र : दिनीप चिंचालकर

कैसा गया पहला दिन

स्कूल का पहला दिन था। माँ ने मुझसे पूछा, "कैसा रहा?" मैंने कहा, "बहुत अच्छा।" वहाँ पर मुझे बहुत से दोस्त मिले। मुझे सबसे अच्छा स्वभाव नेहा का लगा। नेहा बहुत ही बुद्धिमान लड़की थी। वह मुझे पूरी क्लास में अच्छी लगी। वह मेरी सबसे अच्छी दोस्त बन गई थी। एक दिन हमारी क्लास में मेडम हमें पढ़ा रही थीं। मेडम फूल और पौधों के बारे में बता रही थीं। मुझे लगा कि पौधे अपने आप ही ऊपर से गिरकर बन जाते हैं। नेहा ने मुझे बताया कि पौधे बीज़ों से उगते हैं। उसने उसी दिन घर पर आकर मुझे टमाटर के बीज दिए। मैंने उन्हें मिट्टी में गाड़ दिया। कुछ दिन बाद टमाटर का पौधा हो गया। मुझे समझ में आ गया पौधे कैसे होते हैं।

पुष्टि गुजराती

दो चिट्ठियों का जवाब

पहली चिट्ठी विनोद ने अपनी माँ को लिखी है। विनोद किसी शहर में काम करता है। उसने रेडियो और अखबार में अपने गाँव का समाचार सुना और पढ़ा। गाँव वाले किसी स्वामी महाराज के बुलावे पर पहुँच गए। वहाँ भगदड़ मच गई होगी या कोई अनहोनी हुई जिस में कई लोग चोट खा गए और कई मर भी गए। शायद स्वामी महाराज फ्री में साड़ी, पकवान और सामान बाँट रहे होंगे। पत्र से पता चलता है कि विनोद किसी दुकान पर काम करता है। उसके गाँव के लोग भी अलग दूकानों पर काम करते हैं।

दूसरी वाली चिट्ठी माँ ने विनोद को लिखी है। पत्र से पता चलता है कि गाँव में अभी मोबाइल और फोन नहीं हैं। विनोद की माँ को विनोद के खाने-पीने का खूब ख्याल है। गाँव में खूब गरीबी है। तंगी है। रोजगार और काम धन्धा नहीं है। यही बात है कि गाँव छोड़कर विनोद शहर में नौकरी कर रहा है। उसके साथ और गाँव वाले भी गाँव छोड़कर शहर में काम कर रहे हैं। गाँव से ज़्यादा शहर को अच्छा माना जाता है। गाँव में बहुत कमी है। शहर में मिल-जुलकर रहना चाहिए।

वैशाली

आज इतवार का दिन था

आज इतवार का दिन था। नीलू की नानी बना रही थी गुलगुले। महक वाले गोल-गोल गुलगुले। गुलगुलों की महक नदी के पार, जंगल के पार, सीधे नीलू के घर तक आ रही थी। नानी के गुलगुले। नीलू उछली, "मैं खाऊँगी गुलगुले।" और नीलू निकल चली नानी के घर। पहले आया जंगल। कैसे करें पार! तभी वहाँ आई एक नील गाय। नीलू ने कहा, "नील गाय और नील गाय! खाओगी नानी के हाथ के गोल-गोल, मीठे-मीठे गुलगुले?" नीलगाय ने कहा, "वही गुलगुले, जिनकी महक आ रही है?" "हाँ, वही गुलगुले।" नीलू ने कहा। तो फिर देर किस बात की। नील गाय ने कहा, "बैठो, मेरी पीठ पर।" दोनों ने किया जंगल पार। महक और भी तेज़ हो चुकी थी। पर आगे भी नदी। कैसे करें पार? उनको दिखी लखन की नाव। नीलू ने कहा, "लखन-लखन, खाओगे गुलगुले।" लखन ने कहा, "वही गुलगुले, जिनकी महक आ रही है।" "हाँ," नीलू ने कहा, "गोल-गोल मीठे-मीठे गुलगुले।" तो देर किस बात की, लखन ने कहा, "बैठो मेरी नाव में।" तीनों ने की नदी पार। पहुँचे नानी के घर। नानी खड़ी हँस रही थी। नानी ने कहा, "खाओगे गुलगुले?" तीनों ने कहा, "हाँ! और वे तीनों खुशी-खुशी खाने लगे गुलगुले। गोल-गोल गुलगुले, मीठे-मीठे गुलगुले, गुड़ के गुलगुले।

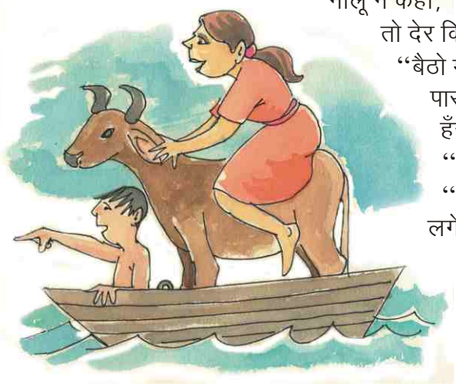

श्वेता दुबे